of each of the other four elements.[63] The following diagram illustrates the point:

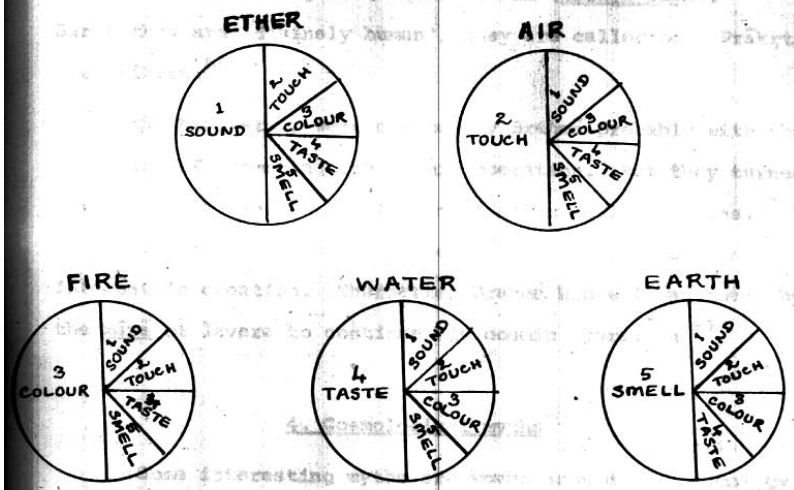

iii) Prākṛta-vaikṛta-sarga

This covers the nineth and last creation called Kaumāra-sarga in which Brahmā creates the five great sages viz., Sanaka, Sanātana, Sanandana, Ṛbhu and Sanatkumāra.[64]

---

63 "ekaikaṁ dvividhaṁ kṛtvā teṣāṁ madhye surottamāḥ
aṁśān pañca samādāya teṣām ekaikam āstikāḥ
kṛtvā caturdhā teṣvaṁśān ādāya caturāḥ surāḥ
yathā-krameṇa bhūtānāṁ caturas tāṁś ca kāraṇam
yathā-krameṇa bhūtārdhenaikenaikaṁ karoti tat"
- SS IV.1.5.52.

64 SS I.10.19b-20.

में शेष तत्त्वों के चतुर्थांश को मिलाने से पञ्चतत्त्वों की पञ्चीकरणर प्रक्रिया बनती है। इस प्रकार प्रत्येक तत्त्व की पञ्चात्मकता सिद्ध होने पर भी भागाधिक्य के कारण पृथिव्यादि विभाग व्यवहार होता है। व्यास भी **'वैशेष्यात्तु तद्वादस्तद्वाद:'** कहकर इसी तथ्य की ओर संकेत करते हैं।

वस्तुत: आकाशादि पञ्चमहाभूत, जैसा कि ऊपर कहा गया है, प्रथमत: अपञ्चीकृत तन्मात्राओं के रूप में ईश्वर शिव द्वारा प्राकृतसर्ग में आविर्भूत हुए। पुन: उन्ही की कृपा से ब्रह्मा द्वारा पञ्चीकरण क्रिया से आकाशादि स्थूल महाभूत के रूप में परिणत हुए[1]। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक महाभूत पञ्चसूक्ष्म तत्त्वों का विभिन्न अनुपातों में मिश्रण है। सूक्ष्म शब्दादि तत्वों को विभिन्न आनुपातिक मिश्रण से बनने वाले महाभूतों की रूपरेखा इस प्रकार है[2]—

वंश

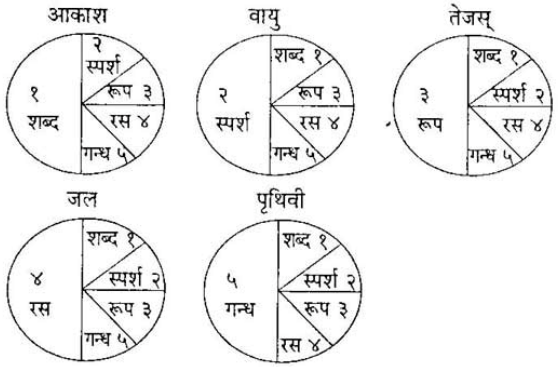

'पुराणं पञ्चलक्षणम्' इस परिभाषा के अनुसार 'वंश' भी पुराणों का प्रमुख वर्ण्यविषय है। सूतसंहिता भी अपने प्रथम अध्याय में सर्गादि वर्णन का वचन तो देती है, किन्तु उसका यह वर्णन अन्य पुराणों की अपेक्षा संक्षिप्त और अपूर्ण ही कहा जा सकता है। जहाँ

---

१. 'ततस्तस्य प्रसादेन निवार्य कमलासन: ।
शब्दादीनि च भूतानि पञ्चीकृत्य द्विजोत्तमा: ।
तेभ्य: स्थूलाम्बरं वायुं बह्निं चैव जलं महीम् ॥ —सू.सं., १/१०/३९ व, ४० व।

२. 'यथा वियदादिकमेकैकं द्विधा द्विधा विभज्य तत्र द्विघातो द्वितीयभागं चतुर्धा विभज्य वायवादिभूत-चतुष्टयप्रथमभागेस्वैकैकं योजयेत्। एवं वायोरपि द्वितीयभागं चतुर्धा विभज्य वायुप्रथमभागं परित्यज्य वायुव्यतिरिक्तभूतचतुष्टयप्रथमभागेषु योजयत्। एवं तेजस: उदकस्य पृथिव्याश्च द्वितीयं द्वितीयं भागं चतुर्धाविभज्य स्वस्वप्रथमभागं परित्यज्यावशिष्टभूतचतुष्टयप्रथमभागेषु योजिते सत्येकैकभूतस्यार्धं स्वकीयमर्धं स्वेतरभूतचतुष्टयात्मकमित्येकैकस्य पञ्चात्मकत्वेऽपि भागाधिक्यात्पृथिव्यादि विभागव्यवहार इति।' —सू.सं., १/१०/३९ ता.टीका।
तुलनीय—'द्विधा विधाय चैकैकं चतुर्धा प्रथमं पुन: ।
स्वस्तेतरद्वितीयां शैर्योजनात् पञ्च पञ्च ते ॥ —पञ्चदशी/२९